वार्तालाप-634, दिनांक 21.09.08, सतना-2
Disc.CD No.634, dated 21.09.08, Satna-2

Part-1

समयः 00.01-06.43
बाबाः गायन है कि प्रजापति ने यज्ञ रचा। उस यज्ञ में सति ने अपना देह स्वाहा कर दिया। वास्तव में देह स्वाहा नहीं कर दिया। देहभान स्वाहा कर दिया। आत्माभिमानी बन गई। आत्मा को ही शक्ति कहा जाता है, शिव की शक्ति, जो आत्मिक स्टेज में स्थिर हो जाती है। अब माताजी, बताइये आप क्या पूछना चाहती हैं? समझ में आ गया कि नहीं? (माताजी - आ गया।) या एक कान से सुना, दूसरे कान से निकाल दिया? ☺
जिज्ञासुः बाबा, ये...
बाबाः अरे माताजी से तो पूछ लेने दो। (माताजी से:) आपके प्रश्न का समाधान हुआ? (माताजी: हाँ बाबा।) हाँ। हो गया।
जिज्ञासुः बाबा, एक प्रश्न है।
बाबाः हाँ बोलो।
जिज्ञासुः बाबा हम दोनों विद्यार्थी एक ही क्लास के है। ये प्रश्न हमारा भी था लेकिन इसमें मुंझान और बढ़ रही है। (बाबाः क्या?) वो बात साफ नहीं हो रही बाबा। (बाबाः हाँ जी, हाँ जी।) बाबा एक मुरली में बोले दादा लेखराज जब प्रश्न जाके बताते है अपना, तो गीता माता से बतलाते है...
बाबाः गीता माता से... गीता माता जो है, जिसको हम माता कहते हैं। (जिज्ञासु - जी हाँ, बड़ी माता।) हाँ, वो माता सिर्फ शरीर है, डब्बा है या आत्मा भी है? (किसी ने कहा - आत्मा भी है।) तो दोनों माताओं में डब्बा का पार्ट बजाने वाली कौनसी है और आत्मा जो धारण करने वाली होती है वो कौन है?
जिज्ञासुः बाबा, ये प्रश्न नहीं है हम लोगों का। दोनों का प्रश्न एक साथ जुड़े हुए है। वो ये प्रश्न है कि जो बच्चे पैदा होंगे राधा-कृष्ण जैसे...
बाबाः राधा-कृष्ण जो सृष्टि की आदि में बच्चे पैदा होंगे...
जिज्ञासुः ...पैदा होंगे। तो एक मुरली में है हम लोगों ने सुना कि बड़ी माता को जाके दादा लेखराज बतलाते हैं अपनी बात।

Time: 00.01-06.43
Baba: It is famous that Prajapati organized a *yagya*. Sati sacrificed her body in that *yagya*. Actually, she did not sacrifice her body, she sacrificed her body consciousness. She became soul conscious. The soul itself is called *Shakti* (power), Shiva's *shakti*, who becomes constant in the soul conscious *stage*. Now *mataji*, say what do you want to ask? Did you understand or not? (Mother replied: Yes I have.) Or did you listen through one ear and leave it out through the other? ☺
Another student: Baba, this…

Email: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

Baba: *Arey*, let me ask *mataji* first. (To the mother:) Did you get the answer to your question? (The mother: Yes Baba.) Yes. It is done.
Student: Baba, I have a question.
Baba: Yes, speak up.
Student: Baba, both of us students are from the same class. I too had this question but the confusion is increasing even more. (Baba: What?) Baba a point is not getting clear. (Baba: Yes, yes.) Baba, it has been said in a murli, when Dada Lekhraj goes to ask his question [about the vision], he goes and narrates it to Gita *mata* (mother Gita)…
Baba: To Gita mata... the mother Gita… the one whom we call mother. (Student: Yes, the senior mother.) Yes, is that mother just a body, [just] a box or does she also have a soul? (Someone said: She has a soul as well.) So, between both the mothers who plays the part of a box and who holds the soul?
Student: Baba, this is not our question. The questions of both of us are linked. The question is that the children like Radha and Krishna who are born...
Baba: Radha and Krishna, the children who will be born in the beginning of the world...
Student: …they will be born. So, we heard in a murli that Dada Lekhraj narrates that topic [of visions] to the senior mother.

बाबाः बड़ी माता माने कौन? जगदम्बा? (जिज्ञासुः जगदम्बा को।) नहीं। जगदम्बा से डायरेक्ट कनेक्शन उतना स्नेह का नहीं है, आंतरिक स्नेह का। देह का स्नेह होता है या आत्मिक स्नेह होता है? (किसी ने कहा - आत्मिक स्नेह।) हाँ? भारत माता से। जो भारत माता का पार्ट बजाने वाली है उसके साथ आत्मिक स्नेह नहीं होता दिल का स्नेह? (किसी ने कहा - होता है।) जो दूसरी पत्नी बनाई जाती है वो देह की पूर्ति के लिए बनाई जाती है या आत्मिक संतोष के लिए बनाई जाती है? कौनसे संतोष के लिए बनाई जाती है? अरे जो दूसरी शादी की जाती है, विकार में जाना माने शादी। दूसरी पत्नी जो बनाई वो दूसरी पत्नी विकारी धारणाओं को पोषण करने के लिए बनाई जाती है या दिल की भावनाओं का पोषण करने के लिए बनाई जाती है? (सभी ने कहा - विकारी भावनाओं...) तो दिल का स्नेह दोनों माताओं में से किससे था? (जिज्ञासु ने कुछ कहा।) बड़ी माता के साथ दिल का स्नेह? देह का स्नेह नहीं था? (जिज्ञासु जो बड़ी बहन थी...) हाँ, जो बड़ी बहन थी वो माता नहीं है? बड़ी माता कहा जाता है जगदम्बा को। जगदम्बा है बड़ी माता। बड़ी माता इसलिए कि सारी सृष्टि की माता है। दूसरे धर्म की जो दूसरी-दूसरी 500 करोड़ आत्माएं हैं वो सबकी माता है। उसे कहते हैं - जगद अम्बा। जगत् माने? 500 करोड़। और वो है सिर्फ भारत माता। जगत् माने? 500 करोड़। वैष्णवी शक्ति, वैष्णवी देवी है। उससे विष्णु कुल की स्थापना होती है। तो ये बात बदल दीजिए।

Baba: What do you mean by the senior mother? Jagdamba? (Student: To Jagdamba.) No. There is no *direct connection* of affection, of inner love with Jagdamba to that extent. Is there bodily love or spiritual love? (Student: Spiritual love.) Is it so? Doesn't he (brother-in-law of Brahma Baba) have spiritual love, affection of the heart for the mother India, the one who plays the *part* of mother India? (Someone said: He has.) Does someone have a second wife for physical pleasures or for spiritual contentment? To fulfill which desire does someone has [a second wife]? *Arey*, when someone marries for the second time - to indulge in lust means

Email: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

to get married – the one whom he made his second wife, does someone have a second wife to fulfill the vicious desires or to fulfill the desires of the heart? (Students: [To fulfill] vicious desires.) So, for whom did he have the affection of the heart between both the mothers? (Student said something.) Did he have love of the heart for the senior mother? Didn't he have physical love? (Student: The elder sister…) Yes. The elder sister [of Brahma Baba] is not the senior mother. Jagdamba is called the senior mother. Jagdamba is the senior mother. She is the senior mother because she is the mother of the entire world. She is the mother of all the 500 crore (five billion) souls of the other religions. She is called the World Mother (*Jagad Amba*). What is meant by *jagat* (world)? 500 crore [souls]. And that one is just the Mother India. She is Vaishnavi *shakti*, Vaishnavi *devi*. The establishment of the Vishnu clan takes place through her. So, change this topic.

जिज्ञासुः प्रश्न ये था बाबा कि एक मुरली में जो हम सुने हैं कि पहली माता से नहीं बताया। उनसे बताने में उनको झिझक लगती थी। बड़ी बहन माता समान होती है। तो उनसे डर लगता है, तो छोटी माता के पास जाके बताते हैं।

बाबाः छोटी मम्मी माने?

जिज्ञासुः छोटी मम्मी को बताते है।

बाबाः माना भारत माता?

जिज्ञासुः भारत माता को जाके बतलाते हैं।

बाबाः ठीक है।

जिज्ञासुः और फिर भारत माता के द्वारा जब उनको ज्ञान मिल जाता है दादा लेखराज को...

बाबाः ...उसे ज्ञान नहीं कहते। साक्षात्कारों को सुनाना कोई ज्ञान नहीं है। (जिज्ञासु: समझ और समझाने की बात है...) जो भी माँ को जो सुनाया दादा लेखराज ने, अपनी बड़ी बहन को जो सुनाया, वो सुनना-सुनाना हुआ। और उस बड़ी बहन ने जो दूसरी माता को सुनाया, वो भी सुनना-सुनाना हुआ। (जिज्ञासु - बड़ी बहन भी छोटी माता को सुनाती है।) सुनाया। हाँ।

जिज्ञासुः वो प्रजापिता के पहले सुनाती है या बाद में सुनाती है?

बाबाः पहले ही सुनाती है। (जिज्ञासु - पहले सुनाती है?) हाँ, जी।

Student: Baba, my question was that we have heard in a murli that he (Brahma Baba) did not narrate [the visions] to the first mother. He hesitated to narrate it to her. The elder sister is equal to the mother, so, he was afraid of her; so, he goes and narrates [the visions] to the junior mother.
Baba: What do you mean by junior mummy?
Student: He narrates it to the junior mummy.
Baba: Do you mean Mother India?
Student: He goes and narrates to the Mother India.
Baba: It is correct.
Student: And when Dada Lekhraj gets the knowledge through Mother India...
Baba: …that is not called knowledge. Narrating the visions is not knowledge. (Student: understanding and explaining...) Whatever Dada Lekhraj narrated to the mother [i.e.] to his elder sister, it was [just] listening and narrating. And whatever that elder sister narrated to the second mother was also listening and narrating. (Student: The elder sister also narrates to the junior mother.) She narrated. Yes.

Email: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

Student: Does she narrate to her before narrating to Prajapita or after narrating [to Prajapita]?
Baba: She narrates it to her at first. (Student: She narrates it to her first?) Yes.

जिज्ञासुः तीसरे नंबर की ब्रह्मा जो बनती है, तीसरे नम्बर की जो ब्रह्मा... मुरली में बोली हुई वाणी है बाबा की। कि वो तीसरे नंबर की ब्रह्मा हुई।
बाबा: कौन?
जिज्ञासु: दूसरी माता, छोटी मम्मी, वो तीसरे नंबर की ब्रह्मा हुई। (बाबाः हाँ।) फिर दादा लेखराज जब पहले कन्वर्ट हो जाते है तो वो फिर बाद में पैदा होते है।
बाबाः देखो, ब्रह्मा के मुख से ज्ञान सुना तो ब्राह्मण पहला बना। इसके लिए बोला गया है, ब्राह्मण बने बिगर प्रजापिता था क्या? प्रजापिता माने 500 करोड़ की प्रजा, उसका पिता। वो पहला ब्राह्मण है सृष्टि का। वो पहला देवता बनता है। लेकिन वो ब्राह्मण जो है वो किसी ब्रह्मा के मुख से सुनेगा तभी तो मुख वंशावली ब्राह्मण कहा जाएगा। किसके मुख से सुना उसने? (जिज्ञासु - बड़ी माता।) बड़ी माता के द्वारा सुना। और पहला ब्राह्मण तब कहा जाएगा जब वो सुनने के साथ-साथ समझे भी। अगर समझे नहीं तो ब्राह्मण कहा जावेगा? (जिज्ञासु - नहीं कहा जावेगा।) ऐसे ही।

Student: The one who becomes Brahma in the third place, the third Brahma… it has been said in Baba's murli that she is the third Brahma.
Baba: Who?
Student: The second mother, the junior mother; she is the third Brahma. (Baba: Yes.) So, Dada Lekhraj converts first but he is born later.
Baba: See, he (Prajapita) listened to the knowledge from the mouth of Brahma so he became the first Brahmin. For this it has been said: Was he Prajapita without becoming a Brahmin ? Prajapita means the father of the five billion subjects. He is the first Brahmin of the world. He becomes the first deity. But that Brahmin will be called a *mukhvanshaavali*[1] Brahmin only when he listens from the mouth of Brahma. From whose mouth did he listen? (Student: The senior mother.) He heard through the senior mother. And he will be called the first Brahmin when he also understands along with listening. If he does not understand, will he be called a Brahmin? (Student: He will not.) It is the same case.

समयः 06.44-09.45
जिज्ञासुः बाबा, कर्मातीत अवस्था जो है...याद की यात्रा में रहते हैं जब, बाबा को याद करते हैं, उस वक्त यदि हमसे कोई गलत कार्य हो जाता है, क्या उसका पाप हमको लगता है कि नहीं लगता है?
बाबाः जो भी गलत कार्य किया जाता है उसका पाप क्यों नहीं लगेगा अगर सौ परसेन्ट याद नहीं होगी? याद होगी 100 परसेन्ट तो पाप नहीं लगेगा। और 100 परसेन्ट याद नहीं है पक्की, व्यभिचारी याद आती है बीच-बीच में तो पाप तो जरूर लगेगा। परसेन्टेज में जरूर लगेगा।

[1] Progeny born from the mouth, meaning the knowledge

Email: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

Time: 06.44-09.45
Student: Baba, as regards the *karmaatiit* stage [2] … when we are in the journey of remembrance, when we remember Baba, if we perform some wrong task at that time, do we accumulate sin or not?
Baba: If any wrong task is performed, why will you not accumulate sin if you are not in hundred *percent* remembrance? If you are in 100 *percent* remembrance, you will not accumulate sin. And if the remembrance is not 100 *percent* firm, if you have adulterous remembrance in between, you will definitely accumulate sin. You will definitely accumulate [sin] in *percentage*.

जिज्ञासुः बाबा, एक और चीज़ है दान की महिमा के बारे में। दान की महिमा होती है। (बाबाः हाँ, जी।) बाबा जब ज्ञान में चलते हैं तो ज्ञान में चलते हुए जो भी हम दान करते हैं... ज्ञान के पहले जो हमने दान किए... तो जब हम भगवान को पहचानते हैं बाबा, उसके बाद हम जो दान करते हैं... जब ज्ञान में चले उसका जन्म माना जाता है। मतलब हमने जन्म लिया, जब ज्ञान में चले तभी जन्म लिया।
बाबाः ब्रह्मा के मुख से सुना तो हम कच्चे ब्राह्मण बन गए। क्या? पक्के ब्राह्मण सो देवता कहा जाता है। तो ब्रह्मा के मुख से सुनने मात्र से ही हम ब्राह्मण बन गए। अब वो कौनसी कुरी के ब्राह्मण बने वो अलग बात है।
जिज्ञासुः बाबा, एक और चीज़ है कि जो ब्रह्मा मुख वंशावली ब्राह्मण हैं मतलब ब्रह्मा के मुख से जो ज्ञान निकला, वाणी को धारणा में उतारेंगे हमलोग, पवित्रता की बात आती है, प्योरिटी का धन जो है, जो भी है, तो मतलब उस ज्ञान को जब हम अपने जीवन में उतारते हैं तब ब्राह्मण कहलाएंगे।
बाबाः नहीं। जो ज्ञान को पहले-पहले जीवन में उतारे , प्रैक्टिकल जीवन में, वो ब्राह्मण जो है वो पक्का ब्राह्मण है।

Student: Baba, there is one more thing about the glory of donation. There is glory of donation. (Baba: Yes.) Baba when we follow [the path of] knowledge, the donation that we make while following the path of knowledge … the donations that we made before entering the [path of] knowledge… so Baba, the donations that we make after recognizing God… when we start following the [path of] knowledge it is called birth. I mean we are born when we follow the knowledge.
Baba: We become weak Brahmins when we listen through the mouth of Brahma. What? A firm Brahmin is called a deity. So, we became Brahmins just by listening through the mouth of Brahma. Well, the category of Brahmins to which we belong is a different topic.
Student: Baba, there is one more topic that those who are *mukhvanshaavali* Brahmins of Brahma, i.e. the knowledge that came out through the mouth of Brahma, when we imbibe that vani (words narrated) in practice… regarding the topic of purity, the wealth of purity, so when we put that knowledge in our life [in practice], we will be called Brahmins.
Baba: No. The Brahmin who assimilates the knowledge first of all in his life, in the life in practice, is a firm Brahmin.

[2] The stage beyond karma

Email: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

जिज्ञासुः बाबा जो लोग ज्ञान में चलते हुए भी , ज्ञान में जो चलते हैं, ज्ञान सुनते भी हैं, उसके बाद भी ज्ञान को धारण नहीं करते हैं वो कौनसे ब्राह्मण हैं?

बाबाः कच्चे ब्राह्मण हैं।

जिज्ञासुः कच्चे ब्राह्मण है। तो बाबा जो कच्चे ब्राह्मण हैं, वो जब सतयुग से उतरेंगे, सतयुग के आते-आते, जो कच्चे ब्राह्मण हुए वो तो दूसरे धर्मों में परिवर्तित हो जाते होंगे, बदल जाते होंगे।

बाबाः अगर अंत तक कच्चे ब्राह्मण रहेंगे, ब्रह्मा के मुख से निकली हुई बातों को 100 परसेन्ट धारण करने वाले नहीं बनेंगे तो मुरली में बोला है, जो दूसरे धर्म की आत्माएं होती हैं वो पूरा ज्ञान कभी धारण नहीं करेंगी। एक बात धारण करेंगी, दूसरी बात धारण नहीं करेंगी। एक बात ज्ञान की मानेंगी, दूसरी बात को नहीं मानेंगी। माने ज्ञान की सारी बातों को धारण नहीं करेंगी। कोई न कोई बातों का काट करती रहेंगी। इसलिए जो मानती ही नहीं हैं, वो चलने का तो सवाल ही नहीं है।

Student: Baba, those who follow the [path of] knowledge, those who listen to the knowledge and even while following the [path of] knowledge if they do not assimilate the knowledge, what kind of Brahmins are they?
Baba: They are weak Brahmins.
Student: They are weak Brahmins. So Baba, when those weak Brahmins descend from the Golden Age, while going from the Golden Age [to the next age] the weak Brahmins will convert to other religions.
Baba: If they remain weak Brahmins till the end, if they do not become the ones who completely imbibe the words that came out from the mouth of Brahma, then it has been said in the murli that the souls belonging to the other religions will never imbibe the knowledge completely. They will imbibe one topic and they will not imbibe another topic. They will accept one point of knowledge and will not accept another point of knowledge. It means that they will not imbibe all the topics of knowledge. They will keep opposing some or other topic. This is why there is no question of following [the knowledge] for those who do not accept [the knowledge] at all.

Part-2

समयः 09.46-11.30

जिज्ञासुः बाबा, एक और चीज है। जो84 जन्म लिए हैं, जो बीज हैं बाबा, जो बीज आत्माएं, वो हमारे एडवांस ज्ञान में हैं। बीज आत्माएं जो हैं...

बाबाः बीज आत्माओं में भी अलग-अलग किस्म के हैं। कोई का छिलका मोटा है, कोई बीज का। और कोई बीज का छिलका पतला है।

जिज्ञासुः बाबा जो एडवांस ज्ञान में हैं तो आप ने बोला है कि उनके देहभान के छिलके उतरेंगे जरूर।

बाबाः हाँ, नम्बरवार उतरेंगे।

जिज्ञासुः नंबरवार उतरेंगे।

Email: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

बाबाः हाँ, कोई का छिलका पहले उतर जाता है और कोई का छिलका बाद में उतरेगा।

Time: 09.46-11.30
Student: Baba, there is one more thing [to ask]. Baba, those who have 84 births, those who are seeds, the seed souls are in our advance knowledge. The seed souls…
Baba: There are different varieties among the seed souls as well. Some seeds have a thick husk. And some seeds have a thin husk.
Student: Baba, you have said that those who are in the advance knowledge, their husk of body consciousness will definitely be removed.
Baba: Yes, it will be removed number wise[3].
Student: It will be removed number wise.
Baba: Yes, the husk of some [seeds] is removed early and the husk of some [seeds] will be removed later.

जिज्ञासुः बाबा, एक और चीज़ पूछनी है। भगवान को गरीब निवाज़ कहा जाता है। तो गरीब निवाज़ क्या हद की बात है या बेहद की बात है?
बाबाः अरे, भगवान आता है तो ब्रह्मा के द्वारा शूद्रों को ब्राह्मण बनाता है। तो वो शूद्र हद के गरीब होंगे या बेहद के गरीब होंगे? वो शूद्रों को क्या कहेंगे? (जिज्ञासु - गरीब।) वो हद के गरीब होंगे उनको उठाएगा या बेहद के गरीबों को उठाएगा? (किसी ने कहा - बेहद के गरीबों को।) शूद्र? वो तो हद के गरीब होंगे तभी तो गरीब निवाज़ गाया जाता है। अरे, प्रजापिता पहले शूद्र था? उसको भगवान ने उठाया पहले-पहले। तो हद का गरीब होगा या बेहद का गरीब होगा? बोलो। (जिज्ञासु - हद का।) हद का गरीब होगा। हाँ, जी।

Time: 10.26-11.30
Student: Baba, I want to ask one more thing. God is called *Garibniwaaz* (Friend of the poor). So, is He *Garibniwaaz* in the limited or in the unlimited?
Baba: *Arey*, when God comes, He transforms the *Shudras*[4] into Brahmins through Brahma. Will those *Shudras* be poor (*garib*) in the limited or in the unlimited? What will those *Shudras* be called? (Student: Poor.) Will He uplift the poor ones in the limited or will He uplift the poor ones in the unlimited? (Someone said: The poor ones in the unlimited.) *Shudra*? They will certainly be poor in the limited, only then is He famous as *Garibniwaaz*. *Arey*, Prajapita was a *Shudra* first, [wasn't he?] God uplifted him first of all. So, will he have been poor in the limited or in the unlimited? Speak up. (Student: In the limited.) He will be poor in the limited. Yes.

समयः 11.58-22.05
जिज्ञासुः बाबा, ये पूछना चाहता हूँ कि चित्रकूट के घाट पर भयी संतन की भीड़, तुलसीदास चंदन घिसें, तिलक देत रघुवीर। इसका क्या मतलब होता है?
बाबाः इसका क्या मतलब? तुलसीदास कौन है? (जिज्ञासु - राम वाली आत्मा।) मुरली में बोला है अपनी-अपनी कथा-कहानियाँ शास्त्रों में लिख दी हैं। जिन आत्माओं ने जो-जो पार्ट बजाए

[3] Sooner or later according to their spiritual effort
[4] Untouchable; members of the fourth and the lowest division of the Indo-Aryan society

Email: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

ना वो अपनी कहानी अपने शास्त्रों में अपने ही हाथों लिखी है बैठकरके। अरे मनुष्यों ने ही शास्त्र बनाए ना। देवताओं ने या भगवान ने तो शास्त्र नहीं बनाए। तो शास्त्र बनाने वाली जो मनुष्यात्माएं थी वो पूर्व जन्म में देवताएं थी कि नहीं राम-कृष्ण की दुनिया में? (जिज्ञासु - थीं।) और देवता बनने से पहले ब्रह्मा मुख के ब्राह्मण थे। ब्रह्मा के मुख से ज्ञान सुनके ब्राह्मण बने। तो तुलसीदास की आत्मा कौन हो गई? (जिज्ञासु - राम वाली आत्मा।)

Time: 11.58-22.05
Student: Baba, I want to ask: '*Chitrakoot ke ghaat par bhayi santan ki bhiir. Tulsidas candan ghise, tilak det Raghuvir*'; what does it mean?
Baba: What does it mean? Listen. Who is Tulsidas? (Student: The soul of Ram.) It has been said in the murli: everyone has written his life story in the scriptures. Whichever soul played whatever *part*, they themselves have written their life story with their own hands in their scriptures. *Arey*, it is the human beings who have prepared the scriptures, haven't they? Neither the deities nor God has prepared the scriptures. So, were the human souls who wrote the scriptures deities in their previous birth, in the world of Ram and Krishna or not? (Student: They were.) And before becoming deities, they were Brahmins born through the mouth of Brahma. They became Brahmins after listening to knowledge through Brahma's mouth. So, who is the soul of Tulsidas? (Student: The soul of Ram.)

राम वाली आत्मा हो गई। अब राम वाली आत्मा के लिए ये बोला गया - चित्रकूट के घाट पर। कूट माने पहाड़। चित्र माने विचित्र। कैसा पहाड़**?** ये विचित्र पहाड़ है। ऐसा दुनिया में कोई पहाड़ नहीं है। क्या? वो पहाड़ जो होते हैं वो स्थूल पहाड़ हैं। ये कौनसा पहाड़ रहा होगा? (किसी ने कहा - विचित्र।) विचित्र का मतलब क्या हुआ? जिस पहाड़ का कोई चित्र नहीं है। विपरीत चित्र। वि माने विपरीत। माना ऐसा पहाड़ रूपी स्टेज वाला, जिस ऊँची स्टेज की पहाड़ पर तुलसीदास चंदन घिसैं। उन्होंने ज्ञान का चन्दन मंथन किया। तुलसीदास माने रामवाली आत्मा ज्ञान का मंथन करती है। तुलसीदास चंदन घिसें। चित्रकूट के घाट पर भई संतन की भीड़। क्या? संत किसे कहा जाता है? सत शब्द से बनता है संत। क्या? जिन्होंने सत का अंत पाया, जो सत को सुनने में जिनकी बुद्धि लगी रहती है और सत सुनाने वाला कौन है? एक परमपिता परमात्मा ही सत सुनाता है। बाकी सब झूठे हैं। नंबरवार झूठे हैं। क्या? ये दुनिया कैसी है? झूठे लेना, झूठे देना, झूठे भोजन, झूठे चबैना। आज से 500 साल पहले तुलसीदास ने लिखा था - भये वर्ण संकर सबै। चाहे ब्राह्मण ही क्यों न हों लेकिन वर्णसंकर शूद्र हो गए। तो ब्राह्मण मनन-चिंतन-मंथन करते हैं या शूद्र मनन-चिंतन-मंथन करते हैं? ब्राह्मण मनन-चिंतन करते हैं।

It is the soul of Ram. Well, it has been said for the soul of Ram: *Chitrakoot ke ghaat par* (in the valleys of mount Chitrakoot). *Koot* means mountain. *Chitra* means *vichitra* (strange). What kind of a mountain? This is a strange mountain. There is no mountain like this in the world. What? Those mountains are physical mountains. Which mountain will this have been? (Someone said: *Vichitra*.) What is meant by *vichitra*? A mountain which does not have any picture (*chitra*). [It is] *vipreet* (opposite to) *chitra*. *Vi* means opposite. It means that it is such a mountain with high *stage* that Tulsidas rubs sandalwood (*Tulsidas candan ghise*) on that

Email: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

mountain. He [rubbed], he churned knowledge in the form of sandalwood. Tulsidas meaning the soul of Ram churns the knowledge. *Tulsidas candan ghise. Chitrakoot ke ghaat par bhayi santan ki bhiir*. What? Who is called a *sant*? *Sant* is derived from the word *'sat'*. What? Those who have attained the end of truth, those whose intellect remains busy in listening truth; and who narrates the truth? The Supreme Father Supreme Soul alone narrates the truth; everyone else is false in the world. They are false number wise[5]. What? What kind of a world is this? *Jhoothe lenaa*, *jhoothe denaa*, *jhoothe bhojan*, *jhooth chabenaa* (giving, taking, eating and chewing, everything is false). 500 years ago Tulsidas had written: *Bhaye varna sankar sabai*[6] . Even if they are Brahmins, they have become the ones with mixed blood, they have become Shudras. So, do the Brahmins think and churn or do the Shudras think and churn? It is the Brahmins who think and churn.

तो चित्रकूट के घाट पर भई संतन की भीड़। जो सत्य को चाहने वाले हैं, सत्य को पहचानने वाले हैं, गॉड इज़ ट्रुथ कहा जाता है। भगवान ही सत्य है। और कोई भी सत्य नहीं। उस भगवान को मानने जानने पहचानने वाले, सत्य को, जो हैं वो ही भगवान के सुनाए हुए ज्ञान को महत्व देते हैं। तो संतन की भीड़ लग गई। पूरा हाल भर गया। ☺ संतन की भीड़ लगी। क्या? असंतों की भीड़ नहीं लगी जिनकी ज्ञान की बातों से, सत्य क्या है उससे कुछ लेना-देना नहीं। भई संतन की भीड़। उस संतों की भीड़ में ज्ञान का चंदन घिसने का कार्य किसने किया सबसे जास्ती? (किसी ने कहा - राम वाली आत्मा।) जो 84 का पूरा चक्कर लगाती है। आलराउंड पार्टधारी आत्मा है। और आत्माओं के एक-दो जन्म, एक-दो दिन, महीना-दो महीना, सप्ताह-दो सप्ताह, 100-200 वर्ष कम भी हो जावेंगे, लेकिन वो? आलराउंड 84 का चक्र लगाने वाली आत्मा है। तो वो ज्यादा मनन-चिंतन-मंथन करेगी वो ज्यादा अनुभवी होगी 84 जन्मों की या कोई दूसरी आत्मा 84 जन्मों की अनुभवी होगी? जो आलराउंड पार्ट बजाने वाला है वो ज्यादा अनुभवी होगा। तो जो अनुभवी होगा वो मनन-चिंतन-मंथन भी? सबसे जास्ती करता है।

So, *Chitrakoot ke ghaat par bhayi santan ki bheer* (a crowd of saints gathered in the valley of Chitrakoot.) Those who like truth, those who recognize truth… it is said, *'God is truth'*. God alone is truth. Nobody else is truth. Those who believe, know and recognize God, [who know] the truth, only they give importance to the knowledge narrated by God. So, a crowd of saints gathered [there]. The entire *hall* was packed. ☺ A crowd of **saints** gathered. What? A crowd of the ones who are not saints (*asant*), [the ones] who have nothing to do with the topics of knowledge and what is the truth did not gather [there]. A crowd of saints gathered. Who performed the task of rubbing the sandalwood of knowledge the most in that crowd of saints? (Someone said: The soul of Ram.) He passes through the complete cycle of 84 [births]. He is an *all-round* actor soul. In case of the others souls, one or two births, one or two days, one or two months, one or two weeks, 100-200 years can also be reduced, but what about him? He is a soul who passes through the complete cycle of 84 [births]. So, will he think and churn more, will he have more experience of the 84 births or will some other soul have the experience of 84 births? The one who plays an *all-round part* will be more experienced. So, the one who is experienced, he also thinks and churns the most.

[5] At different levels
[6] Everyone has become the one with mixed blood or caste

Email: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

तो कहा है तुलसीदास चंदन घिसे। ज्ञान का चंदन घिसना माना जो ब्रह्मा मुख से वेदवाणी सुनाई गई है उसका मनन-चिंतन-मंथन करके अपना बनाना। जैसे गाय घास खाती है। तो क्या करती है? चबाती है। अगर चबाएगी नहीं तो दूध नहीं बनेगा। कब दूध बनेगा? जितना चबाएगी। ऐसे ही ये ब्रह्मा के मुख से निकला हुआ ज्ञान बेसिक ब्राह्मण वाले कुमार-कुमारियां भी सुन रहे हैं। लेकिन वो चबाते नहीं हैं। ऐसे ही निगल जाते हैं। और जो चबाने वाले हैं वो? चित्रकूट के घाट पर जहाँ भई संतन की भीड़। तिलक देत रघुबीर। क्या? किसने तिलक दिया? रघुबीर ने तिलक दिया। अरे, भक्तों ने तो राम और कृष्ण को भगवान मान लिया है। वास्तव में राम और कृष्ण भगवान हैं या देवता थे? 14 कला संपूर्ण, 16 कला संपूर्ण। अरे भगवान की कलाएं कम होती हैं क्या? भगवान तो 16 कला संपूर्ण देवता बनाने वाला है। वो कलाओं में कभी बंधने वाला नहीं है। वो कलातीत है। क्या? कलातीत कल्याण कल्पांतकारी कहा जाता है। तो भई संतन की भीड़, तुलसीदास चंदन घिसैं, तिलक देत रघुबीर। रघुवीर का मतलब क्या हुआ? रघु माने सूर्य। जो भी सूर्यवंशी हैं, जो भी हैं उनमें वास्तविक सूर्य का पार्ट बजाने वाली आत्मा कौनसी आत्मा है? शिव की आत्मा है या शंकर की आत्मा है? शिव की आत्मा है रघु। वो तिलक लगाती है विश्व की बादशाही।

So, it has been said: *Tulsidas chandan ghise*. To rub the sandalwood of knowledge means to think and churn the *Ved vaani* narrated through the mouth of Brahma and to make it ours. For example, when a cow eats grass, what does it do? It chews [the grass]. If it doesn't chew it, milk will not be produced. When will milk be produced? The more it chews, [the more milk will it produce]. Similarly, the Brahmins in the *basic* [knowledge], the Brahmakumar-kumaris are also listening to the knowledge that came out of the mouth of Brahma, but they do not chew it (churn it). They simply gobble it down. And those who chew it... *Chitrakoot ke ghaat par bhayi santan ki bhiir. Tilak det Raghuvir*. What? Who applied the *tilak*[7]? Raghuvir applied the *tilak. Arey*, the devotees have considered Ram and Krishna as God. Were Ram and Krishna God or were they deities in reality? [They were] complete with 14 celestial degrees, complete with 16 celestial degrees. 0*Arey*, do the celestial degrees of God reduce? In fact, God is the one who **makes** us into a deity complete with 16 celestial degrees. He can never be bound in celestial degrees. He is beyond celestial degrees (*kalaatiit*). What? He is called *Kalaatiit Kalyaan Kalpaantkaari*[8]. So, a crowd of saints has gathered, Tulsidas rubs the sandalwood and Raghuvir applies the *tilak*. What is the meaning of Raghuvir? Raghu means the sun. Among all the *Suryavanshis*, which soul plays the *part* of the Sun in reality? Is it the soul of Shiva or the soul of Shankar? The soul of Shiva is Raghu. It applies the *tilak* of emperorship of the world.

जितने भी बैठे हुए हैं नंबरवार मंथन करने वाले हैं। जितना मंथन करने वाले हैं, ज्ञान का मंथन करके, ईश्वरीय ज्ञान को मथ करके जितना-जितना विशालबुद्धि बनते हैं, उतना अपने जन्मों को अर्जुन बनकरके जान जावेंगे। ज्ञानी तू आत्मा बनेंगे। अपनी आत्मा के 84 के पार्ट को जान जावेंगे। (किसी ने पूछा - मंथन करते-2 अपनी जानकारी मिल जाएगी?) अपनी

[7] A vermilion mark
[8] The One who is beyond the celestial degrees, the One who is beneficial, the One who brings an end to the cycle

Email: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

जानकारी अपने आप होगी या सबको एक-एक को शिवबाबा बताएगा? (किसी ने कहा - अपने आप होगी।) तुलसीदास चंदन घिसें तिलक देत रघुबीर। विश्व की बादशाही का तिलक भगवान देते हैं। माना शिव जो हैं क्या करते हैं? जो जितना मंथन करेगा, चिंतन करेगा, उसको विश्व की बादशाही का तिलक मिलेगा नंबरवार। एक जैसे विश्व के बादशाह नहीं बनते हैं। ऐसे तो दुनिया में सारे विश्व के ऊपर कंट्रोल करने के लिए आकांक्षा करने वाले बहुत हुए। हिटलर, नेपोलियन। सारे विश्व के ऊपर कंट्रोल करने के लिए आमादा थे। लेकिन रास्ता गलत अपनाया। हिंसा का रास्ता अपनाया। हिंसक युद्ध कराए। हिंसा से विश्व की बादशाही नहीं मिलती है। ये राजयोग बल है, जो भगवान ही आकरके सिखाता है। और राजयोग बल से बड़े ते बड़े राजा विश्व का महाराजा बनाता है। बना रहा है। जो राजयोग सीखेंगे वो नंबरवार बनेंगे।

All those who are sitting [here] churn [the knowledge] number wise[9]. The more they churn, the more they churn the knowledge, the knowledge of God and become the ones with a broad intellect (*vishaal buddhi*), the more they will become [like] Arjun and know their births; they will become knowledgeable souls, they will realize their parts in the 84 births. (Someone asked: Will we get the information about ourself by churning?) Will we ourselves come to know about us or will Shivbaba narrate [about it] to each and every one? (Someone said: We will ourselves come to know it.) Yes, so, [it is said:] Tulsidas rubs the sandalwood and Raghuvir applies the *tilak*. God applies the *tilak* of emperorship of the world. It means, what does Shiva do? Whoever churns, thinks [over knowledge] to whatever extent, the *tilak* of emperorship of the world will be applied to him sooner or later (according to his spiritual effort). They do not become the emperors of the world to the same extent. In a way, there were many people [like] Hitler, Napoleon, who had the ambition to *control* the entire world. They were all set to *control* the entire world. But they adopted a wrong path. They adopted the path of violence. They caused violent wars to take place. The emperorship of the world cannot be obtained through violence. It is the power of Raja yoga that God alone comes and teaches. And He makes us the biggest kings, the emperors of the world through the power of Raja yoga; He is **making** [us into that]. Those who learn Raja yoga will become [the emperors of the world] sooner or later (according to their spiritual effort).

Part-3

समयः 22.08-24.25

जिज्ञासुः बाबा, मुरली में आया है कि तुम बच्चे जो हैं बाद में प्रवेश करके सेवा करेंगे। (बाबाः हाँ, जी।) तो बाबा एक आत्मा जो है, अगर सोल कानशस में, उसकी आत्मिक स्टेज होती है, तो एक में प्रवेश करती है या अनेक में प्रवेश करती है?

बाबाः आत्मा एक है या एक आत्मा के अनेक रूप हैं? हर आत्मा एक है। तो एक समय में एक में ही प्रवेश करके पार्ट बजावेगी या एक समय में अनेकों में प्रवेश करके पार्ट बजावेगी? (जिज्ञासु - एक में।) भक्तिमार्ग में समझ लिया है कि भगवान एक आत्मा है, परमात्मा है, आत्माओं में परम पार्ट बजाने वाली है, और वो सबमें प्रवेश होके पार्ट बजाती है। तो योगयुक्त

[9] More or less according to their capacity

Email: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

होगा या योग भ्रष्ट होगा? अनेकों को याद करेंगे तो योगभ्रष्ट बन जावेंगे। भगवान सर्वव्यापी नहीं है। भगवान तो एकव्यापी होकरके कर्तव्य करता है। इसलिए उस एक को पहचान करके उसको याद किया जा सकता है। बुद्धि एकाग्र हो सकती है। अगर भगवान सबमें व्यापक हो जाए तो सबको याद करने से बुद्धि भ्रष्ट होगी या श्रेष्ठ बनेगी? व्यभिचारी बुद्धि बन जावेगी। इसलिए गीता में भी बोला है मामेकम् याद करो। मामेकम् नमस्कुरु। मेरे को ही नमस्कार करो, नमन करो, माना बुद्धि झुकाओ। और किसी के सामने बुद्धि झुकाने की दरकार नहीं है। जो औरों-औरों के सामने बुद्धि झुकाने वाले होंगे वो बड़े ते बड़े राजा नहीं बन सकते।

Time: 22.08-24.25
Student: Baba, it has been mentioned in the murli, you children will enter [the bodies of others] and do service in the end. (Baba: Yes.) So Baba, when a soul is in the soul conscious stage, does it enter one [body] or many [bodies]?
Baba: Is a soul single or does a soul have many forms? Every soul is single. So, will it enter only one [body] at a time or will it enter many [bodies] and play the *part* simultaneously? (Student: [It will enter] one.) They have considered in the path of *bhakti* that God is a soul, He is the Supreme Soul; He plays the supreme *part* among the souls and He plays His *part* by entering everyone. Then will He be *yogyukt* (perfect in yoga) or *yogbhrasht* (have an adulterated yoga)? If we remember many, we will become *yogbhrasht*. God is not omnipresent. God performs His task by becoming *ekvyaapi* (being present in one [being]). This is why we can recognize that One and remember Him. The intellect can be focused. If God becomes omnipresent then will the intellect become adulterated by remembering everyone or will it become elevated? The intellect will become adulterated. This is why it has been said in the Gita as well: Remember Me alone. *Maameva namaskuru* [meaning] greet (*namaste*) Me alone, bow the head meaning bow your intellect [in front of Me]. There is no need to bow your intellect in front of anyone else. Those who bow their intellect in front of others cannot become the biggest kings.

समय: 24.26-34.35
जिज्ञासु: बाबा, शंकर के गले में सांप दिखाते है और विष्णु भी शेषनाग दिखाते है। वो सांप बड़ा दिखाते है और शंकर के पास छोटे-2 सांप दिखाते है। इसका क्या अर्थ है?
बाबाः हाँ, कहते हैं ना गले पड़ गया। क्या? मिले न फूल तो कांटों से दोस्ती कर ली। भगवान जब इस सृष्टि पर भगवान बनके आता है तो उसे फूल नहीं मिलते। क्या मिलते हैं? (सभी ने कहा - कांटे।) बड़े ते बड़े कांटे मिलते हैं। बहुत दुःख देने वाले विकारी। सबसे जास्ती विकारी कौनसा जानवर होता है? (जिज्ञासु - बन्दर।) बन्दर। तो भगवान बन्दरों की सेना ले लेते हैं। बन्दरों जैसे विकारी। बन्दरों में काम विकार कितना होता है? ऊँची डाल पर चढ़करके, सबके सामने काम विकार भोगता है। इतना विकारी होता है। क्रोध इतना होता है कि अगर चने डाल दिये जाएं फैलाके और डंडे डाल दिये जाएं तो आपस में इतना लड़ते हैं कि खूनखान कर देते हैं। ये भी नहीं देखते ये हमारा बच्चा है, ये हमारी अम्मा है, क्या है? लोभी इतने होते हैं कि एक छोटी सी मटकी में चने डाल दो, जिसका मुहरा छोटा हो मटकी का मुँह छोटा

Email: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

हो, उसमें वो हाथ डाल देगा और मुट्ठी भर लेगा। तो तब तक नहीं छोड़ेगा जब तक वो मटकी टूट नहीं जावेगी। वो बुद्धि रूपी हाथ फंस गया तो फंस गया। वो मटकी को अपने आप नहीं फोड़ेगा। मटकी अपनेआप भले टूट जाए। और भूंगरों को भी नहीं छोड़ेगा।

Time: 24.26-34.35
Student: Baba, snakes are shown around the neck of Shankar and Vishnu is also shown on [lying on] *Sheshnaag* (snake bed). That snake is big and the snakes shown around Shankar are small. What does it mean?
Baba: Yes, it is said: they hang around my neck (*gale pad gayaa*), isn't it? What? [It is said:] when I did not find flowers, I befriended the thorns. When God comes in this world as God, He does not find flowers. What does He find? (Everyone said: Thorns.) He finds the biggest thorns, the vicious ones who give a lot of sorrow. Which animal is the most vicious? (Student: Monkey.) Monkey. So, God takes the army of monkeys. They are vicious like monkeys. Monkeys are so lustful! They climb on a high branch and enjoy lust in front of everyone. They are so vicious! They are so wrathful that if grams are thrown in front of them and if sticks are put before them, they fight with each other to the extent that they cause bloodshed. They do not even see whether [the one whom they are beating] is his son, mother or who is it. They are greedy to such an extent that if you put grams in a small pot with a narrow neck; they will put their hand in it and fill the fist with grams. They will not open the fist until the pot breaks. Once that hand like intellect has entangled, it remains entangled. It (the monkey) will not break that pot on its own. It doesn't matter if the pot breaks on its own but it will not leave the grams.

मोही इतना होता है कि अगर बच्चा मर जाए तो महीनों तक उसकी खाल को अपने पेट से लिपटा करके रखती है बंदरी। बन्दरी ही क्यों लिपटा के रखती है? बन्दर क्यों नहीं लिपटा के रखता? क्योंकि अभी जो बन्दरियाँ हैं उनमें मोह ज्यादा है या बन्दरों में ज्यादा मोह है? जो पुरुष पार्ट बजाने वाले बन्दर हैं राम की सेना के उनमें ज्यादा मोह है या बन्दरियों में ज्यादा मोह है? (सभी ने कहा - बंदरिया।) इसलिए बोला है माताओं का अगर मोह विकार खत्म हो जाए तो समझो माताएं विजयी हो गईं। और अहंकार बन्दर में इतना होता है कि हाथी भी सामने से गुज़रेगा तो उसके सामने भी घुडक मारेगा..खौ...। अरे कहाँ हाथी और कहाँ छोटा सा बन्दर।

It has so much attachment that if its child dies then the female monkey keeps its dead body clung to her abdomen for many months. Why does only the female monkey keep it clung to herself? Why doesn't the male monkey keep it clung to himself? It is because do the female monkeys have more attachment or do the male monkeys have more attachment at present? Do the monkeys who play a male *part* in the army of Ram have more attachment or do the female monkeys have more attachment? (Students: The female monkeys.) This is why it has been said that if the vice of attachment in the mothers is removed then think that the mothers have become victorious. And the monkey has so much ego that even if an elephant passes in front of it, it will growl at it as well. (Baba mimics the way of growling.) *Arey*, what a difference there is between an elephant and a small monkey!

Email: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

तो ऐसे-ऐसे कामी, क्रोधी, लोभी, मोही, अहंकारी जो भारतवासी हैं बीज रूप आत्माएं इस सृष्टि की इतनी पावरफुल हैं भगवान के डायरेक्ट बच्चे बनने वाले हैं, भगवान दुनिया में ऊँच ते ऊँच है, राजाओं का राजा बनाने वाली इतनी सर्वशक्तिवान आत्मा है भगवान तो उसके बच्चे कम पावरफुल होंगे या ज्यादा पावरफुल होंगे? ज्यादा पावरफुल तो होते हैं लेकिन वो ही बच्चे... राजा महाराजा के बच्चे अगर कुसंग में आ जाएं तो राजा महाराजा के बच्चे ज्यादा बिगड़ते हैं या कोई गरीब आदमी के बच्चे ज्यादा बिगड़ते हैं? (सभी ने कहा - राजा-महाराजा के।) ज्यादा खतरनाक कौन बन जाते हैं? (सभी ने कहा - राजा-महाराजा के।) राजा-महाराजा का बच्चा जो है बहुत खतरनाक, बहुत बिगडैल बन जाता है। ऐसे ही ये भगवान के बच्चे बन्दर हैं। राम की सेना कही जाती है। बाकी ऐसे नहीं है कि भगवान ने कोई बन्दरों की सेना ली। मनुष्य ही बन्दर मिसल बन जाता है।

So, the Indians who are lustful, wrathful, greedy, the ones with attachment, egotistic in this way, the seed form souls of this world are so *powerful*. They become the *direct* children of God. God is the highest one in the world. God is such an almighty soul who makes us into the king of the kings, so, will His children be less *powerful* or more *powerful*? They are certainly more powerful, but if the same children… if the children of kings and emperors fall in with bad company, are the children of kings and emperors spoilt more or are the children of a poor person spoilt more? (Everyone said: [The children] of kings and emperors.) Who become more dangerous? (Everyone said: [The children] of kings and emperors.) The child of a king or an emperor becomes very dangerous, very spoilt. Similarly, these children of God are [like] monkeys. It is called the army of Ram. As for the rest, it is not that God took an army of monkeys [in reality]. Human being himself becomes like monkey.

तो उन्होंने लिख दिया है मनुष्य 84 लाख योनियों में जाता है। अरे मनुष्य 84 लाख योनियों में नहीं जाता है, 84 लाख योनियों जैसे कर्म करने लग पड़ता है। सूरत मनुष्य की और सीरत बन्दरों जैसी हो जाती है। बाकी ऐसे नहीं है कि भगवान ने आकरके बन्दरों को पढ़ाई पढ़ाई, भगवान ने आकरके घोड़े का अवतार लिया, घोड़ों को पढ़ाई पढ़ाई, हैग्रीव अवतार लिया, भगवान ने आकरके मछली का अवतार लिया - मत्स्यावतार, मछलियों को पढ़ाई पढ़ाई, राजयोग सिखाया, ऐसा कुछ नहीं है। ये मनुष्यात्माओं के चरित्र हैं जिन्होंने ऐसे-ऐसे पार्ट बजाए हैं। सूअर का अवतार लिया। सूकर अवतार दिखाय दिया। अरे भगवान को मनुष्य पढ़ाने के लिए नहीं मिले? सूअर पढ़ाने के लिए मिला? अरे पढ़ाई पढ़ने वालों में जो-जो मनुष्य थे, उन मनुष्यों में से भी सूअर की जाति के मनुष्य ऐसे थे। जो काहे में लोटते हैं? कीचड़ में लोटते हैं। सूअर कहाँ लोटता है? लोट लगाता है कीचड़ में। ये विषय विकार क्या हैं? ये कीचड़ में लोट लगाने वाली बात है। कीचड़ में रमण करता है।

So, they have written that human being passes through 84 lakh (8.4 million) species. *Arey*, a human being does not pass through 84 lakh species [in reality], he starts performing actions like [the creatures in] the 84 lakh species. They have a human face, but the behavior becomes like that of the monkeys. Well, it is not that God came and taught lessons to the monkeys, that God incarnated as a horse [and] taught lessons to the horses, that He incarnated as a

Email: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

horse (*haigriiv avataar*), that God came and incarnated as a fish [called as] *matsyaavataar* [and] taught lessons to the fishes, taught them Raja yoga; there is nothing like that. It is about the acts of human souls who have played parts in this way. [It is said that] He incarnated as a boar (*suar*). They have shown *sukaraavataar* (boar incarnation). *Arey*, doesn't God find human beings to teach? Did He find a pig to teach? *Arey*, even among the human beings who studied the knowledge, there were such human beings [with the character] of the species of pig. In what do they roll about? They roll about in mire. Where does a pig roll about? It rolls about in mire. What are these vices? It is rolling about in mire. It (the pig) delights in mire.

ऐसे जो विकारी मनुष्य हैं मनुष्य सृष्टि के इस्लाम धर्म की आत्माएं महाविकारी, एक स्त्री से तो उनका जिंदगी में काम चलता ही नहीं। इसलिए धरम में नूँध कर दी है कि चार-चार शादियाँ कर सकते हो। तो ऐसी मनुष्य जाति के जो प्राणी होते हैं उनमें से जो सबसे पावरफुल प्राणी हैं इब्राहिम, वो इब्राहिम ऊपर से जो आत्मा आती है आत्म लोक से उसका गायन है या ऊपर से आने वाली आत्मा जिन देवताओं में प्रवेश करके उनको कनवर्ट करती है उसका गायन है? (जिज्ञासु - जिनमें प्रवेश करती है।) जिसमें प्रवेश करती है उसका गायन है। ये जितने भी धरमपितायें आए वो सीधे आके कोई बच्चा नहीं बन जाते हैं। परमधाम से जो आत्मा आएगी, पवित्र लोक से आएगी तो पवित्र आत्मा होगी या अपवित्र आत्मा होगी? पवित्र आत्मा होती है। पवित्र आत्मा गर्भ से जन्म नहीं ले सकती। इसलिए जो सतयुग त्रेता में जन्म लेते-लेते-लेते जो देवात्माएं नीचे उतरीं द्वापरयुग में उनमें से जो श्रेष्ठ आत्मा है लेकिन पढ़ाई कम पढ़ी है, पूरी पढ़ाई नहीं पढ़ी, ऐसी अधूरी पढ़ाई पढ़ने वाली आत्माओं में जो श्रेष्ठ है उसमें प्रवेश करती है। वो ही सूकर अवतार कहा गया।

Such vicious human beings of the human world, the souls of the Islam religion are the most vicious ones. They aren't satisfied with [just] one wife in their life at all. This is why they have made this rule in their religion that they can marry four times. So, the most *powerful* living being among those belonging to such human race [is] Abraham. Is the soul of Abraham who comes from above, from the Soul World famous or are the deities in whom the souls coming from above enter and *convert* them famous? (Student: The ones in whom it enters.) The one in whom it enters is famous. All the religious fathers who arrived do not become a child directly. The soul that comes from the Supreme Abode comes from a pure abode, so will it be a pure soul or an impure soul? It is a pure soul. A pure soul cannot be born through the womb. This is why the deity souls who degraded in the Copper Age while having births in the Golden and the Silver Ages, among them, the soul who is elevated but has studied less, who didn't study the knowledge completely… it enters the elevated soul among the souls who study incomplete knowledge. That itself is said to be the boar incarnation.

बाकी भगवान कोई 24-24 अवतार नहीं लेते। 10-10 अवतार नहीं लेते जो दशावतार शास्त्रों में बताए गए हैं। जो गीता में लिखा हुआ है संभवामि युगे-युगे। हर युग में आता हूँ, चार युग में चार अवतार कह लो। फिर कहीं 10 अवतार कहीं 24 अवतार, ये क्या चक्कर है? भगवान तो सिर्फ जब ये सृष्टि रूपी मकान बहुत पुराना तमोप्रधान हो जाता है दुखदायी कलियुग बन जाता है, पापी युग बन जाता है, तब आते हैं, ऐसे नहीं कि द्वापर के अंत में

Email: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

कृष्ण का रूप धारण करके भगवान आया और पापी कलियुग की स्थापना करके चला गया। अरे, भगवान आवेगा तो सुख की दुनिया बनावेगा या पापियों की दुनिया बनावेगा? दुख की दुनिया बनाने के लिए भगवान आता है क्या? अरे लौकिक दुनिया का भी बाप होता है वो अपने बच्चों के लिए सुख देने के लिए नया मकान बना के जाता है या दुख देने के लिए जाता है? दुख देकरके बाप नहीं जाता। बाप हमेशा अपने बच्चों के लिए खुशी की सृष्टि रचता है। वो तो बेहद का बाप है।

As for the rest, God doesn't take 24 incarnations; He doesn't take 10 incarnations that have been mentioned in the scriptures. It has been written in the Gita: *Sambhavaami yuge yuge* [meaning] I come in every age. You can say that [He takes] four incarnations in the four ages. Then somewhere [it is mentioned that there are] ten incarnations and at some other places it has mentioned that there are 24 incarnations; what is this? God comes only when this house like world becomes very old, *tamopradhaan*, sorrowful Iron Age, when it becomes a sinful age. It is not that God arrived in the form of Krishna at the end of the Copper Age and departed after establishing the sinful Iron Age. *Arey*, when Gold comes, will He create a world of happiness or will He create a world of sinful ones? Does God come to create a world of sorrow? *Arey,* even in case of the father in the *lokik* world , does he build a new house to give happiness to his children and then goes or does he depart after giving sorrow? The father doesn't depart after giving sorrow. The father always creates a world of happiness for his children. [And as regards Him], He (God) is the unlimited Father.

Part-4

समयः 34.36-37.27

जिज्ञासुः बाबा, प्रश्न अधूरा रह गया। शंकर के आस-पास सांप है छोटे-2 और विष्णु के नजदीक बड़ा सांप है ।

बाबाः हाँ, गले में नहीं लटका है। (जिज्ञासुः नहीं, वो शेषनाग।) हाँ, वो आराम से लेटा हुआ है। (जिज्ञासुः तो वो कौनसा सांप है?) लेटा हुआ का मतलब ये है कि जो भी बड़े से बड़े सांप हैं जिसे शेषनाग कहो, वासुकी नाग कहो, जो अनेक फनों वाला है। क्या? कितने फन दिखाते हैं? पांच फन दिखाते हैं। वो ही रावण के रूप हैं। उनके ऊपर आराम से लेटता है। कोई चिन्ता नहीं। वो भी सुखदायी बन जाते हैं। क्या? कनवर्ट हो जाते हैं। जैसे जो भारतवासी दूसरे-दूसरे धर्मों में कनवर्ट होकरके कोई क्रिश्चियन बने, कोई मुसलमान बने, कोई बौद्धी बन गए। वो ही कनवर्ट होने वाली आत्माएं जब भगवान आते हैं वो देवी-देवता सनातन धर्म के कच्चे देवताएं बन जाते हैं, कम कला वाले, कम जन्म लेने वाले। उनके जो मुखिया हैं, वो ही सांपों के रूप में नीचे पड़े हुए दिखाए गए हैं। तो विष्णु में और शंकर में अंतर है।

Time: 34.36-37.27

Student: Baba, the question was left incomplete. Small snakes are shown around Shankar and the snake shown near Vishnu is big.

Baba: Yes, it is not hanging around the neck. (Student: No, the *Sheshnaag*.) Yes, he (Vishnu) is lying comfortably. (Student: Which snake is it?) He is lying on it means the biggest snake, call it *Sheshnaag* or Vasuki *naag*, it has many hoods. What? How many hoods are shown?

Email: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

Five hoods are shown. They themselves are the forms of Ravan. He (Vishnu) lies comfortably on them. There is no worry. They (the snakes) become pleasurable, too. What? They *convert*. For example, the Indians converted to other religions and some became Christians, some became Muslims and some became Buddhists. On the arrival of God, the same souls who have converted become the weak deities of the Ancient Deity Religion, the ones with fewer celestial degrees, the ones who have fewer births. Their heads themselves have been shown lying below in the form of snakes. So, there is a difference between Vishnu and Shankar.

शंकर के गले में पड़े हुए हैं। गले पड़ गए। क्या करें? मिले न फूल तो कांटों से दोस्ती कर ली। ये गले पड़ गए हैं। इनको निबाह करना ही पड़ेगा। पूर्व जन्मों का हिसाब-किताब है। द्वापर-कलियुग में जन्म लिए ना। इन्हीं राजाओं के साथ जन्म लिए हैं जिन्होंने राजयोग सीख करके जन्म-जन्मान्तर राजाएं बने। ये राजाएं भारत के आपस में सबसे जास्ती मुड़मुटौल करते रहे हैं या प्यार से रहे हैं? भारत के राजाओं ने आपस में खूब मुड़मुटौल की। जब कोई विदेशियों का आक्रमण होता था तब उनकी आँखें खुलती थीं। और जो उस समय भारत का बड़ा राजा होता था उसकी शरण लेकरके, इकट्ठे होकरके लड़ाई लड़ते थे। नहीं तो ये सब आपस में एक-दूसरे को धोखा देने वाले हैं। भारत का नाम बदनाम करने वाले हैं। अगर ये भारतवासी राजाएं राम वाली आत्मा के पूर्वजन्मों में सहयोगी बनकरके रहे होते और विदेशियों से लगातार मुकाबला किया होता तो भारत की ये दुर्दशा नहीं होती। अभी भी ऐसे ही है।

They are hanging around the neck of Shankar. They have clung to him! What can he do? When he did not find flowers, he befriended the thorns. These ones have clung to him. He will have to carry on with them. There are the karmic accounts of the previous births. He had births in the Copper and the Iron Ages, didn't he? He was born with these very kings who learnt Raja yoga and became kings for many births. Have these kings of India been fighting with each other the most or have they been living affectionately? The kings of India fought with each other a lot. Their eyes used to open (they used to realize) when they were attacked by foreigners. And [then] they used to seek the asylum of the biggest king of India of that period and fought in unity. Otherwise, all these kings are the ones who cheat each other. They are the ones who defame India. Had these Indian kings been helpful to the soul of Ram in the past births and had they confronted the foreigners continuously, then India would not have reached this pathetic condition. It is the same condition even now.

समयः 37.43-43.00

जिज्ञासुः बाबा ने गारंटी दी है, जो बच्चे...में है उनका पूरा परिवार ज्ञान में चलेगा। तो परिवार में बाबा कौन-कौन शामिल हैं?...

बाबाः परिवार में जो भी खून होता है, एक परिवार के, जो भी एक घर में रहने योग्य होते हैं वो सब परिवार है। (जिज्ञासुः दूर-दूर रहें तो?) अगर परिवार के हैं, अगर कोई मुसीबत आ जाए तो कहाँ आएंगे? परिवार में ही आएंगे। वो परिवार है सारा। एक खून है। इसलिए जो भी अभी ज्ञान में चलने वाले है और डायरेक्ट भगवान को पहचाना हुआ है और भगवान के

Email: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

सन्मुख बैठ करके पढाई पढ़ते हैं, मानते हैं, जानते हैं, और चलने का प्रयास करते हैं उन बच्चों को ये वरदान मिला हुआ है - तुम्हारा पूरा का पूरा परिवार ज्ञान में चलेगा। क्यों चलेगा? इसीलिए चलेगा कि परिवार के लोग खूब अपोजिशन कर रहे हैं अभी। अपोजिशन करने के बावजूद भी भगवान ने तुम्हें डायरेक्शन दिया है - भूं-भूं करते रहो ज्ञान की। जैसे भ्रमरी भूं-भूं करके कीड़े को आप समान बना लेती है, ऐसे ही तुम परिवार में रहते हो, सारा परिवार विरोध करता है, सारा मोहल्ला विरोध करता है, सब संबंधी विरोध करते हैं लेकिन फिर भी तुम ज्ञान की भूं-भूं करते रहते हो। तो उनके कान में तो पड़ता है ना। और कान में पड़ते हुए भी वो तुमको लात मारकरके विभीषण की तरह बाहर तो नहीं निकाल देते। ये तो चाहते हैं कि ये हमारे घर में रहें। चाहते हैं या नहीं चाहते हैं? (सभी ने कहा - चाहते हैं।) चाहते हैं। और तथाकथित ब्रह्माकुमार-कुमारियाँ? वो तो तुम्हें लात मारकरके निकाल दिया। तो वो तो इतनी ग्रहण शक्ति उनमें है ही नहीं जो तुम्हारी बात को सुनें। ये कम से कम सुनते तो हैं, विरोध करते हैं तो कोई बात नहीं।

Time: 37.43-43.00
Student: Baba has guaranteed that the children who are in…, their entire family will follow the [path of] knowledge. So Baba, who are included in the family?
Baba: The blood relations in a family, those who belong to the same family, all those who live in the same home are included in the family. (Student: What if they are living far away?) If they belong to the family… if any problem arises, where will they go? They will certainly go to the family. All of them are included in the family. They have a blood relation. This is why, all those who are following the knowledge now, those who have recognized God directly and study the knowledge by sitting face to face with God, those who accept [the knowledge], know it and make efforts to follow it, those children have received this boon: Your entire family will follow the knowledge. Why will it follow? It will follow because now, the people in the family are opposing a lot. Though they oppose, God has given you the direction to keep whispering the knowledge in their ears. Just as a bumblebee buzzes around a worm and makes it equal to itself, similarly, even if the family in which you live, every member in the family opposes you, every person in the suburb opposes you, all the relatives oppose you, keep narrating knowledge. So, it does fall in their ears, doesn't it? And even if those topics fall in their ears, they do not kick you out [of the house] like Vibheeshan [was kicked out by Ravan]. At least, they want you to live in the home. Do they wish this or not? (Everyone said: They do.) They do. And what about the so-called Brahmakumar-kumaris? They kicked you out [of the centre]. So, they do not have so much grasping power at all to listen to your words. At least these people (family members) listen to you; it doesn't matter if they oppose [you].

जिज्ञासु: नहीं बाबा, हमारा प्रश्न ये है कि जो दूर रहते है...
बाबाः अभी बात पूरी नहीं हुई। तो जो सुनते हैं और फिर भी तुमको सहन करके अपने पास रखना चाहते हैं, जब संसार में भगवान की प्रत्यक्षता होगी तो सबसे पहले कौन मानेंगे? दुनिया वाले मानेंगे या तुम्हारे परिवार के लोग मानेंगे? (सभी ने कहा - परिवार के लोग।) परिवार के लोग पहले मानेंगे। क्योंकि उन्होंने पहले से ही तुम्हारी ज्ञान की बातों को सुना

Email: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

हुआ है, समझते भी हैं लेकिन मानते नहीं हैं अभी। अभी विश्वास नहीं बैठा हुआ है। जब विश्वास बैठ जावेगा, सूर्य निकल आवेगा उस समय अमृतवेला खतम हो जावेगा। अमृतवेला जो योगीजन पुरुषार्थ करते हैं वो पुरुषार्थ का फल मिलता है। अमृतवेले का महत्व ज्यादा है। ये ज्ञान सूर्य उदय होने वाला है। उदय होने से पहले अमृतवेला चल रहा है।

Student: No Baba, my question was that those who stay far…
Baba: The topic hasn't completed yet. So, those who listen [to you] and yet tolerate you and want to keep you with them… when God is revealed in the world, who will believe [the knowledge] first of all? Will the people of the world believe it or will the family members believe it? (Everyone said: The members of the family.) The family members will accept first because they have already heard the topics of knowledge from you, they understand it as well, but they do not accept it at present. They don't have faith now. When they have faith, when the Sun has risen, the [time of] *amritvelaa*[10] will be over. The yogis who make *purushaarth* (spiritual effort) at *amritvelaa* obtian the fruits of *purushaarth*. There is more importance of *amritvelaa*. This Sun of Knowledge is about to rise. [The time of] *amritvelaa*, [the time] before the sunrise is going on.

इस अमृतवेले में जो पुरुषार्थ कर लेंगे भगवान के बताए अनुसार वो ऊँच पद पाने वाले राजघराने में जन्म लेने वाले बनेंगे। कोई महाराजा बनेंगे, कोई महारानी बनेंगे, कोई राजा बनेंगे, कोई रानी बनेंगे। कोई प्रिंस बनेंगे, कोई प्रिंसेज़ बनेंगे। कोई राज्याधिकारी बनेंगे। अकेला राजा थोड़ेही राजाई करता है। करता है क्या? नहीं करता है। लेकिन जब सूर्य निकल आवेगा, सारे संसार में प्रत्यक्ष हो जावेगा फिर अमृतवेला खतम। तो वो परिवार के लोग पुरुषार्थ नहीं कर पाएंगे। झगड़े का माहौल दुनिया में पैदा हो जाएगा। महाभारी महाभारत गृहयुद्ध शुरु हो जाएगा। खून खराबे होंगे। हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख, ईसाई सब आपस में लडेंगे। तो पढ़ाई शांति के टाइम पर होती है या अशांति के टाइम पर होती है? अभी शांति का टाइम चल रहा है। तो अभी मानने के लिए तैयार नहीं हैं। लास्ट में मान तो लेंगे, लेकिन पुरुषार्थ? नहीं कर पाएंगे इसलिए प्रजा पद में आ जावेंगे। स्वर्ग में तो आवेंगे लेकिन ऊँच पद नहीं पावेंगे।

Those who make *purushaarth* in this *amritvelaa* as per God's directions will achieve a high post and be born in royal clan. Some will become emperor, some will become empress, some will become kings, some will become queens, some will become *prince* and some will become *princess*. Some will become royal officers. A king does not rule alone. Does he? He doesn't. But when the Sun has risen, when it is revealed in the entire world, the [time of] *amritvelaa* will be over. So, those family members will not be able to make *purushaarth*. An atmosphere of fights will be created in the world. The massive civil war of Mahabharata will begin. Bloodsheds will take place. Hindus, Muslims, Sikhs and Christians, all will fight among themselves. So, do the studies take place when there is peace or when there is restlessness? Now a peaceful *time* is going on. They are not ready to accept now. They will certainly accept in the end, but what about *purushaarth*? They will not be able to make

[10] Early morning hours before the sunrise

Email: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

[*purushaarth*]; that is why they will achieve the post of subjects. They will no doubt go to heaven, but they will not achieve a high post.

जिज्ञासुः जैसे हम घर-परिवार में पत्नी है, बच्चे हैं। और हमारे परिवार में भाई हैं, माता है। तो वो लोग गांव में रहते है, दूर रहते हैं। तो वो लोग आएंगे या नहीं आएंगे ज्ञान में? दूर रहते हैं, काफी दूर रहते हैं।

बाबाः तुम्हारा फर्ज क्या कहता है? पहले घर का सुधार करोगे या पर का सुधार करोगे? घर में आग लगी हुई हो तो कोई बाहर दूसरे के घर में पानी डालने जाता है? पहले अपने घर के परिवार में अपने बाल-बच्चों को आग से बचाता है। अब जान गए आप कि भगवान आके ज्ञान दे रहा है, दुनिया में आग लगने वाली है, तो आपका फर्ज क्या कहता है? घर में गांव वालों को जाके समझाना या नहीं समझाना? बस इतना कहके दूर हो जाएंगे कि वो तो दूर रहते हैं? आपको नज़दीक जाके सुनाना नहीं चाहिए? (जिज्ञासु: सुनाना चाहिए।) सुनाना चाहिए।

Student: For example, there are wife and children in my family at home. And there are brothers, mothers in my family; those people live in the village, they live far off. Will they come in knowledge or not? They live far away, they live very far.
Baba: What is your duty? Will you reform the home first or will you reform others first? If the house is on fire, does anyone go outside to put out the fire in the house of someone else? First he saves the children in his family from fire. Now, you have come to know that God has come and is giving knowledge, the world is going to catch fire, so, what is your duty? Should you go to their house and explain the people in village or not? Will you refrain just by saying that they live far away? Should you not go to them and narrate? (Student: It should be narrated.) You should narrate.

समयः 44.09-45.49

जिज्ञासुः बाबा, 2018 में जैसे बाबा ने बताया है संगमयुगी कृष्ण की प्रत्यक्षता होगी। तो उसके बाद 18 वर्ष फिर से लगते हैं इसी शरीर को कंचनकाया बनाने के लिए।

बाबाः कंचनकाया तब बननी शुरु होगी जब प्रकृति के 5 तत्व सतोप्रधान बनेंगे। ये शरीर प्रकृति का नमूना है। ये 5 तत्वों का शरीर है। ये सतोप्रधान बनना तब शुरु होगा जब 500 करोड़ की दुनिया जो है वो सतोप्रधान वायब्रेशन वाली बनेगी। तो 500 करोड़ की दुनिया सन् 36 तक रहेगी या नहीं रहेगी, 18 वर्ष तक? रहेगी ना। (जिज्ञासु: रहेगी।) तो वायब्रेशन दुनिया के गंदे रहेंगे या अच्छे बनेंगे? 2036 तक, जब तक एटम बम का इकट्ठा विस्फोट न हो... (जिज्ञासु - गंदे बनेंगे।) गंदे बनेंगे ना। तो गंदे वायब्रेशन में प्रकृति जो 5 तत्वों वाली है वो सतोप्रधान बनेगी कि और ही तमोप्रधान होती जाएगी? (सभी ने कहा - तमोप्रधान।) और ही तमोप्रधान होगी। तो ये शरीर सड़ते जावेंगे या सतोप्रधान बनेंगे? शरीर तो सड़ते जावेंगे, परंतु आत्मा योगबल से पावरफुल बनेगी।

Time: 44.09-45.49

Email: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

Student: Baba, Baba has said that the Confluence Age Krishna will be revealed in 2018. Then after that it takes 18 years again to rejuvenate (*kancankaayaa*) the body.
Baba: The body will start to rejuvenate when the five elements of nature become *satopradhaan*[11]. This body is a model of nature. This body is made up of five elements. It will start becoming *satopradhaan* when the world of 500 crores (five billion) [souls] will have *satopradhaan* vibrations. So, will the world of 500 crores exist till 2036, for 18 years [after 2018] or not? It will exist, will it not? (Student: It will.) So, will the vibrations of the world be dirty or will they become good? Until 2036, until the atom bombs are exploded all together… (Student: They will become dirty.) They will become dirty, won't they? So, will the nature consisting of five elements become *satopradhaan* or will it continue to become *tamopradhaan*[12] because of the dirty vibrations? (Everyone said: *Tamopradhaan*.) It will become even more *tamopradhaan*. So, will these bodies continue to decay or will they become *satopradhaan*? The bodies will certainly continue to decay, but the soul will become *powerful* through the power of yoga.

Part-5

समयः 45.51-47.42

जिज्ञासुः बाबा, जैसे कोई शरीर छोड़ता है तो वो आत्मा पुनर्जन्म लेती है। दूसरा जन्म जाकर लेती है। वह आत्मा कैसे गर्भ में प्रवेश कर लेती है? कैसे उसको पता चलता है, उस आत्मा को कि..?

बाबाः आत्मा को... कहीं बच्चा होता है, बच्चा बनकरके जब बड़ा होता है तब तक भी उसको पता कुछ भी नहीं चलता। अभी आप इतने बड़े हो गए। आपको कुछ पता चला क्या? ये कोई बात नहीं हुई। हाँ, ये है कि आदमी जब शरीर छोड़ता है तो शरीर छोड़ने से 4 महीने पहले से ही माँ का गर्भ उसके संस्कारों और वायब्रेशन के अनुसार तैयार होने लगता है। क्या? मनुष्य के शरीर छोड़ने से 4 महीने, 5 महीने पहले से ही कोई माता के गर्भ में उस आत्मा के वायब्रेशन के अनुसार, उस आत्मा के कर्मों के अनुसार, संस्कारों के अनुसार वो पिण्ड तैयार हो जाता है हाथ, पांव वाला, निर्जीव पिण्ड। क्या? अगर उसने टांग ज्यादा चलाई होगी, टांग से ढ़ेरों की हत्या कर दी होगी मार-मार के लातें तो लंगड़ा पैदा होगा। आँखों से दुष्कर्म करके, व्यभिचारी आँख बनाकरके बहुत-सी कन्याओं-माताओं को बहुत दुःख दिया होगा; आज इससे आँख लड़ाई उसको फंसाय लिया। फिर उसको छोड़ दिया। फिर दूसरे से आँख लड़ाई, उसको छोड़ दिया। तीसरे को छोड़ दिया। ऐसे मजे ले-लेकर के आँखों का बहुत दुष्कर्म कर दिया। तो कैसा पैदा होगा? अंधा पैदा होगा।

Time: 45.51-47.42
Student: Baba, for example, if anyone leaves the body, that soul is reborn. It takes another birth. How does that soul enter the womb? How does that soul come to know…?
Baba: As regards the soul, suppose there is a child [and] when that child grows up, even then he doesn't come to know anything. You have grown so big; did you come to know anything? This is not sensible. Yes, but it is true that when a person leaves his body, then four months before leaving the body, the foetus starts developing in [the next] mother's womb according

[11] Consisting in the quality of goodness and purity
[12] Dominated by darkness and ignorance

Email: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

to the *sanskaars* and vibrations [of that soul]. What? Four [or] five months before a person leaves his body, the foetus, the non-living foetus with hands and legs develops in the mother's womb in accordance with the vibrations, in accordance with the actions, *sanskaars* of that soul. What? If he has used his leg more, if he has killed many people with his legs by kicking them continuously, then he will be born lame. If he has given sorrow to many virgins and mothers by committing evil actions through the eyes, by making the eyes adulterous; [for example,] today, he exchanged glances with one girl and trapped her [in his love]; then he left her. Then he exchanged glances with another girl and he left her. He left the third girl [after doing the same]. He enjoyed pleasure through the eyes in this way and committed evil actions a lot; so, how will he be born? He will be born blind.

समयः 47.44-51.10

जिज्ञासुः बाबा, बाली और सुग्रीव दानों भाई था। लेकिन बाली जो है वो जिससे लड़ता था उसका आधा ताकत उससे आ जाता था। लेकिन राम को ज्यादा मानते थे सुग्रीव। और सुग्रीव लड़ते थे बाली से तो उसका आधा ताकत उसमें आ जाता था। ये कैसी बात है?

बाबाः बाली का लड़का कौन था? (जिज्ञासु - अंगद।) अंगद। जिसने अपना अंग-अंग ईश्वरीय सेवा में अर्पण कर दिया। तो अंगद किसका लड़का है? बाली का। बाली ने अपने भाई का सारा राज्य हरण कर लिया। पत्नी का भी राज्य हरण कर लिया। किसने? बाली ने। और बाली को ये वरदान दे दिया। क्या? कि जो सन्मुख होकरके लड़ेगा, माने सामना करेगा उसकी आधी ताकत खत्म हो जावेगी। यहाँ मुरलियों में भी बाबा ने बोला है, बाप का तो कब सामना नहीं करना चाहिए। क्या? जो बाप का पार्ट है प्रजापिता, मनुष्य सृष्टि का हीरो पार्टधारी, शंकर, उसका अगर कोई वाचा से, क्रोध की दृष्टि से, कर्मेन्द्रियों से विरोध करता है तो क्या रिजल्ट आयेगा? उसकी आधी ताकत, जो विरोध करने वाला है, उसकी आधी ताकत का उसी समय हरण हो गया। माने वो कभी विजयी नहीं हो सकता। इसलिए फिर राम ने क्या किया? राम ने सात ताड़ों को सामने रखा। जो सात ताड़ के वृक्षों को एक बाण से ढावेगा वो बाली को मार सकता है। ताड़ के वृक्ष बहुत ऊँचे होते हैं। लेकिन छायादार नहीं होते। ये जो सात विधर्मी नारायण हैं ये ग्रेट फादर्स माने जाते हैं मनुष्य सृष्टि में। बहुत ऊँचे माने जाते हैं। लेकिन सुख की, शांति की छाया दुनियावालों को नहीं दे सकते। इनको सामने रखकरके उसका वध किया जाता है।

Time: 47.44-51.10

Student: Baba, Bali and Sugriiv were brothers. But with whomever Bali used to fight, half the strength [of the opponent] used to come in him. But Sugriiv had a lot of faith in Ram. And when Sugriiv used to fight with Bali, half of his strength was transferred to him (Bali). How is it so?

Baba: Who was Bali's son? (Student: Angad.) Angad. The one who dedicated every part of the body (*ang*) in the service of God. So, whose son is that Angad? Bali's son. Bali seized the entire kingdom of his brother. He seized the kingdom of his wife as well. Who? Bali. And Bali received this boon. What? That whoever fights with him being face to face, i.e. whoever confronts him will lose half of his strength. Baba has said here, in the murlis as well: you should never face the Father. What? What will be the *result* if someone opposes the one who

Email: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

plays the *part* of the Father, Prajapita, the *hero* actor of this human world, Shankar through words, through vision, through the *karnendriyaan*[13]? He [meaning] the opponent will lose half his strength at that very moment. It means, he will never be victorious. This is why, what did Ram do? Ram stayed [behind] seven palm trees in front of him. [It is said:] The one who makes seven palm trees fall down with [just] one arrow can kill Bali. Palm trees are very tall, but they do not provide shade. These seven *vidharmi*[14] Narayans are considered to be the *great fathers* in the human world. They are considered to be very great. But they cannot provide the shade of happiness and peace to the people of the world. [Bali] is killed by keeping them in front.

समयः 51.11-52.48

जिज्ञासुः बाबा, जैसे कोई आत्मा शरीर छोड़ती है, शरीर छोड़ने के 4 महीने पहले उसका पिण्ड बन जाता है। आत्मा को कैसे पता चलता है कि हमारा वही पिण्ड है?

बाबाः अरे तुम्हें अभी मालूम पड़ा? पूर्व जन्म की कोई भी बात किसी को मालूम पड़ती है क्या? (जिज्ञासु: फिर कैसे उधर पहुँच जाती है?) अपने संस्कारों के अनुसार पहुँचती है। अपने संस्कारों के अनुसार जिस माता के गर्भ में पहुँचना होगा वो हिसाब-किताब उसने पूर्व जन्म में ही बांध लिया। जहाँ जीत वहाँ जन्म। वो जो माता निमित्त बनेगी, माँ-बाप निमित्त बनेंगे, जिन माँ-बाप को उस आत्मा का बच्चा बनने के बाद टट्टी-पेशाब साफ करनी पड़ेगी, ऐसा कर्मबंधन उन माँ-बाप ने पूर्व जन्म में बांध लिया है। बच्चे माँ-बाप के दास-दासी बनते हैं या माँ-बाप बच्चों के दास-दासी होते हैं? (सभी ने कहा - माँ-बाप।) सारी जिंदगी की कमाई बच्चों को सौंप देते हैं। जन्म देते समय, पालना करते समय, पढ़ाई पढ़ाते समय, धन कमाते समय बच्चों के लिए कितना दुःख भोगते हैं। पूर्वजन्म से ही ये प्रारब्ध लाता है।

Time: 51.11-52.48

Student: Baba, for example, a soul leaves the body; four months before it leaves the body, the foetus for it is formed. How does the soul come to know which is its foetus?

Baba: *Arey*, did you come to know [about your soul]? Does anyone come to know about his past birth? (Student: Then how does it reach there (that womb)?) It reaches there as per its *sanskaars*. It has already formed karmic accounts in the previous birth with the mother in whose womb it has to enter as per its *sanskaars*. [It is said:] someone is born where he gains victory. The mother who becomes instrument, the parents who become instrument, the parents who will have to clean the excrements of that soul when it is born as their child, those parents formed such karmic accounts [with that soul] in the past birth . Do the children become the servants of parents or are the parents the servants of their children? (Everyone said: The parents.) They entrust the earnings of the entire life to their children. They suffer so much sorrow for the children while giving birth [to them], while sustaining them, while teaching them, while earning money. [The child] brings this reward [of his deeds] from the previous birth itself.

[13] Parts of the body used to perform actions
[14] Those whose beliefs and practices are opposite to that set by the Father

Email: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

समयः 52.49-57.45

जिज्ञासुः बाबा, ब्रह्मा के मुख से जो वाणी निकली उसे वेदवाणी कहा जाता है। तो फिर ये उपनिषद् जो लिखी गयी, ये?

बाबाः वेद पुराने ते पुराने हैं। वेद के बाद तुरंत उपनिषद् नहीं बने। व्याख्या उपनिषदों के रूप में नहीं हुई। वेदों से निकले आरण्यक, उनसे निकले ब्राह्मण, उनसे निकले उपनिषद्। उसके बाद बने हैं पुराण। ये एक दूसरे की व्याख्याएं होती रहीं। क्या? जैसे ब्रह्मा के मुख से जो वाणी निकली, उस मुख से निकली हुई वाणी को व्याख्या की जाती है। अव्वल नंबर के ब्राह्मण के द्वारा व्याख्या की जाती है। तो जो व्याख्या है उनको ब्राह्मण कहा गया। फिर उस व्याख्या को जो गहरे से गहरा फालो कर लेते हैं प्रैक्टिकल जीवन में वो आरण्यक कहे गए। आरण्यक माने जंगल। तुम बच्चों की विजय कब होगी? जब सन्यासी निकलेंगे तब तुम्हारी विजय हो जावेगी। उस ज्ञान की गहराई को जिन सन्यासियों ने जन्म-जन्मान्तर पवित्रता धारण की है वो उस ज्ञान की गहराई को गहराई तक पकड़ेंगे। और गहराई तक पकड़ने के कारण वो जो व्याख्या करेंगे बाबा की वाणी की वो आरण्यक कही जाती है।

Time: 52.49-57.45

Student: Baba, the vani (murlis) that came out from the mouth of Brahma is called *Ved vaani*. Then, what about these Upanishads that were written?

Baba: Vedas are the most ancient. Upanishads were not written immediately after the Vedas. They were not interpreted in the form of Upanishads. Aaranyaks emerged from the Vedas [and then] the Brahmanas emerged from the Aaranyaks; Upanishads emerged from the Brahmanas. After that the Puranas were written. They were clarified one after the other in this way. What? For example, the vani that came out from the mouth of Brahma. Now, the vani narrated through that mouth is clarified. It is clarified by the *number* one Brahmin. So, the clarifications are called Brahmanas. Then, those who *follow* those clarifications in the deepest way in their *practical* life are called Aaranyaks. Aaranyak means jungle. When will you children gain victory? You will become victorious when the Sanyasis come [in knowledge]. The Sanyasis who have assimilated purity for many births will grasp the depth of this knowledge to the deepest extent. And because of grasping it deeply, the clarifications that they give for Baba's vani is called Aaranyak.

बाद में फिर बनते हैं उपनिषद्। उप माने नज़दीक। नज़दीक बैठ करके ज्ञान दिया जाता है। जैसे कठोपनिषद्। एक गुरु और एक समझने वाला चेला। प्रजा कब बनती है? और वारिसदार कब बनता है? एक बैठ करके एक को समझाएगा, सात दिन का कोर्स देगा, फोर्स भरेगा, तो क्या बनेगा? वारिसदार बनेगा। बाप का बच्चा बनेगा। राजाई का हकदार बनेगा। अगर प्रदर्शनी कर दी और ढ़ेरों के ढ़ेर आ गए और प्रदर्शनी में समझ करके चले गए। वो क्या बनते हैं? वो प्रजा बन जाते हैं। तो ऐसा भी टाइम आवेगा कि एक बैठ करके एक को सात दिन तक समझावेगा। दूसरे की दृष्टि, वृत्ति, वाचा, उसका व्यभिचार नहीं लगेगा। क्योंकि जब कोई किसी को समझाता है ज्ञान तो दृष्टि से दृष्टि भी मिलानी पड़ती है। वो दृष्टि अव्यभिचारी होनी चाहिए या व्यभिचारी होनी चाहिए? (सभी ने कहा - अव्यभिचारी।) वाचा। शिष्य प्रश्न

Email: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

पूछेगा, जो समझाने वाला है वो जवाब देगा। किताबें और शास्त्र तो लिमिटेड होते हैं। वो प्रश्नों का समाधान नहीं करते। रामायण पढ़ लो। सबके अलग-अलग प्रश्न आयेंगे रामायण पढ़ने के बाद। उन प्रश्नों का समाधान रामायण की किताब करेगी? नहीं करेगी। कोई भी शास्त्र हो। वो प्रश्नों का समाधान नहीं करेगा। सन्मुख बैठकरके अगर सच्चा ज्ञानी ब्राह्मण होगा तो हर प्रश्न का समाधान करेगा। कोई शास्त्र रिफर करने की जरूरत नहीं। क्योंकि ईश्वरीय ज्ञान शास्त्रों से नहीं आता है। ज्ञान सागर बाप से आता है। तो उपनिषद बने । फिर बाद में उपनिषदों की व्याख्या पुराण बने। ढ़ेर सारे पुराण हैं। अच्छा, टाईम हो गया।

Later on the Upanishads are written. '*Up*' means near. The knowledge is given by sitting close. For example, the 'Kathopnishad'; there is one guru and [just] one disciple to understand. When are subjects formed and when are inheritors formed? When one [person] sits and explains [only] one [person], when he gives him the seven days *course*, fills *force* in him, then what will he (the listener) become? He will become an inheritor, he will become the Father's child [and] he will become the one to have the right for kingship. If an exhibition is held, many come [there] and go away after understanding [the clarifications given] in the exhibitions, what do they become? They become subjects. So, one such *time* will also arrive when one [person] will sit and explain to one [person] for seven days. There won't be the adulteration of the vision, vibrations and speech of the second person. It is because when someone explains knowledge to someone else, he also has to look into his eyes; should that vision be unadulterated or should it be adulterated? (Everyone said: Unadulterated.) [In case of] speech; the student will ask questions and the teacher will reply them. The books and the scriptures have *limited* [knowledge]. They don't have answers for the questions. Read the Ramayana; everyone will have different questions after reading the Ramayana. Will the book of Ramayana have answer for those questions? It will not. It may be any scripture, it won't have answers for the questions. If he is a true knowledgeable Brahmin, he will sit in front and answer every question. There won't be the need to *refer* (study) any scripture because the knowledge of God is not obtained from the scriptures. It is received from the Ocean of Knowledge, the Father. Thus, the Upanishads were formed. Later, the clarifications of those Upanishands were written into Puranas. Many Puranas [were written]. *Acchaa*, the *time* is over. (Concluded)

Email: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info